ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद
राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा

तिथि–10 अगस्त 2018
सृष्टि संवत्- १, ९६, ०८, ५३, ११९
युगाब्द-५११९, अंक-१०३, वर्ष-१२
श्रावण, विक्रमी २०७५ (अगस्त 2018)
मुख्य संपादक : हनुमत्प्रसाद 'अथर्ववेदाचार्य'
कार्यकारी संपादक : आचार्य सतीश
सम्पर्क सूत्र: 9350945482
Web: www.aryanirmatrisabha.com
E-mail : krinvantovishwaryam@gmail.com

ऋषि दयानन्द

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

(राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा का मासिक विचार पत्र)

तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः। दिवीव चक्षुराततम्।। –ऋ० १। २। ७। ५

व्याख्यान– हे विद्वान् और मुमुक्षु जीवो! [(विष्णोः॰)] विष्णु का जो परम (अत्यन्तोत्कृष्ट पद) पदनीय सबके जानने योग्य, जिस को प्राप्त होके पूर्णानन्द में रहते हैं, फिर वहाँ से कभी दुःख में नहीं गिरते, उस पद को (सूरयः) धर्मात्मा, जितेन्द्रिय सब के हितकारक विद्वान् लोग यथावत् अच्छे विचार से देखते हैं। वह परमेश्वर का पद है। किस दृष्टान्त से? कि जैसे आकाश में (चक्षुः) नेत्र की व्याप्ति वा सूर्य का प्रकाश सब ओर से व्याप्त है, वैसे ही (दिवीव, चक्षुराततम्) परब्रह्म सब जगह में परिपूर्ण एकरस भर रहा है। वही परमपदस्वरूप परमात्मा 'परमपद' है। इसी की प्राप्ति होने से जीव जीवन सब दुःखों से छूटता है। अन्यथा जीव को कभी सुख नहीं मिलता। इससे सब प्रकार से परमेश्वर की प्राप्ति में यथावत् प्रयत्न करना चाहिए।।

सम्पादकीय

घुसपैठ पर हंगामा

यह सृष्टि का एक निश्चित तथ्य है कि संसार परिवर्तनशील है, जिसमें सर्वोपरि मानव जाति है और मानव निरन्तर गमनशील है। वह एक स्थान पर, एक जैसी जलवायु से परिपूरित वातावरण में, एक जैसी परिस्थितियों में रहना स्वीकार नहीं कर पाता, अपितु वह नित्य-निरन्तर सपनों के लोक में विचरण करता है, संसार में सुख खोजता है, सुख के लिए सुविधाएं चाहिए होती हैं और उन्हीं के लिए मनुष्य ग्रामों से कस्बों की ओर, कस्बों से शहरों की ओर, शहरों से नगरों की ओर, नगरों से महानगरों और महानगरों से विकिसित देशों की ओर गमनागमन बनाए रखता है। विश्वभर में ऐसे करोड़ों प्रवासी मनुष्य निवास करते हैं, जो अपनी-अपनी मेहनत से स्वयं ही नहीं अपितु उस समाज-राष्ट्र का भी उपकार करते हैं जहाँ वे निवास कर रहे हैं।

किन्तु दुर्भाग्यपूर्ण वातावरण तब उत्पन्न होता है जब करोड़ों वैध प्रवासियों के साथ-साथ किसी भी देश में करोड़ों की संख्या में अवैधरूप से लोग घुसपैठ करने लगें। इससे देश के मूल निवासियों और वैधानिक प्रवासियों को दुर्दिन देखने पड़ते हैं, क्योंकि किसी भी देश के पास सीमित संसाधनों का जो उपयोग देश के मूलनिवासियों एवं वैधानिक प्रवासियों के हित में होना चाहिए, उन्हें जो मिलना चाहिए उस पर अवैध घुसपैठियों के द्वारा की जाने वाली लूट हावी हो जाती है, जिससे अव्यवस्था तथा अराजकता का उत्पन्न होना स्वभाविक है।

पुनरपि संसारभर में यह अवैध घुसपैठ भी तीन प्रकार की है। **प्रथम**- विवशतावश की जाने वाली घुसपैठ, यह उन लोगों के द्वारा की जाती है जो प्राकृतिक आपदाओं, अपने देश की अव्यवस्था, अराजकता के कारण अपने एवं अपने परिवार के जीवन पर मंडराती मृत्यु को देखते हुए बचते-बचाते किसी भी अन्य देश में जैसे-तैसे प्रवेश कर जाते हैं, जैसे हमारे देश में बाँग्लादेश से आये हुए चकमा (हिन्दु) शरणार्थी, तिब्बतियन शरणार्थी, 1947 में आये शरणार्थी, वर्तमान में पाकिस्तान से आये हुए तीर्थयात्री, नेपाल की खुली सीमा से आने-जाने वाले नेपाली आदि। किन्तु इन प्रथम प्रकार के लोगों से भले ही सुख-सुविधा और संसाधनों की समस्या हमारे देशवासियों को होती हो किन्तु मानवीय सम्बन्धों, मानवता के सिद्धान्तों के आधार पर उनके संकट को देखते हुए कोई मानवतावादी देश ऐसे विवश लोगों को न जाने के लिए कह सकता है न विवश कर सकता है और न ही हमारे देश के निवासियों को उनसे किसी प्रकार की शिकायत सुनी गयी है।

द्वितीय- षड्यन्त्रता पूर्वक षड्यन्त्रकारी मानसिकता के साथ की जाने वाली घुसपैठ। ऐसे घुसपैठियों की कोई विवशता (मजबूरी) नहीं होती,

शेष अगले पृष्ठ पर

संपादकीय का शेष...

अपितु वे प्रथम तो छोटे-छोटे स्वार्थों की पूर्ति के लिए अन्य देश की सीमाओं में येन-केन प्रकारेण घुस जाते हैं, कुछ समय तक अपनी आजीविका आदि के लिए प्रयास करते हुए जिस किसी भी कार्य से धनार्जन करते हुए धीरे-धीरे उस देश में सामाजिक मूल्यों पर प्रहार करते हुए अव्यवस्था, अराजकता एवं आतंकवाद के वातावरण का निर्माण करने लगते हैं। जैसे कि- हमारे देश में आये हुए बाँग्लादेशी (मुस्लिम) घुसपैठिये, पाकिस्तान से आये हुए (मुस्लिम) घुसपैठिये, अफगानिस्तान से आये हुए घुसपैठिये आदि।

तृतीय- अपने देशों में अराजकता, आतंक फैलाने वाले वहाँ के ही नागरिकों, पुलिस प्रशासन एवं सेना आदि की कार्यवाही के फलस्वरूप भागकर अन्य देशों में घुसने वाले घुसपैठिये। ऐसे घुसपैठिये न तो अपने देश में शान्ति-सद्भाव के साथ रहते हैं और न ही घुसपैठ किये देश में ही, ऐसे घुसपैठिये सबसे दुर्दान्त, खतरनाक होते हैं, यह न अपनों के, न दूसरों के होते हैं। वर्तमान में इस प्रकार के घुसपैठियों में हमारे देश में बर्मा (म्यांमार) से आये हुए रोहिंग्या घुसपैठिये हैं और दुनियाभर में सीरिया आदि के शरणार्थी।

इतिहास साक्षी है कि उपरोक्त दूसरे और तीसरे क्रम के घुसपैठियों ने सर्वाधिक हानि हमारे देश में की है। इस तीसरे क्रम में हम मुस्लिम आक्रान्ताओं एवं अंग्रेज, डच, फ्रेंच आदि से तत्कालीन घुसपैठियों को भी लेते हैं, जिनमें वास्को डि गामा, क्लाइव आदि भी रहे हैं।

पाठकगणों! वर्तमान में हमारे देश में इन दूसरे व तीसरे प्रकार के घुसपैठियों की समस्या खतरनाक स्तर पर है, जब से पूर्वोत्तर के सबसे बड़े राज्य असम में माननीय उच्चतम न्यायालय के निर्देशानुसार एवं निगरानी में **''राष्ट्रीय नागरिकता पंजीकरण'' (N.R.C.)** लागू किया गया है, सन् 1971 ई॰ से पूर्व के असम में निवास के प्रमाण मंगवाकर लोगों को सूचीबद्ध किया गया है और ऐसे लोगों की सूची जारी की गयी, तब से राजनेताओं की स्थिति बड़ी वीभत्स हो गयी है। लगभग सभी राजनैतिक दल इस उहा-पोह में अपने-अपने मत (वोट) देखने लगे हैं, सो मनचाही आग उगल रहें हैं, देश तोड़ने तक की धमकी दे रहे हैं, गृहयुद्ध की चेतावनी पूर्ण भाषा खुलकर बोली जा रही है, वह भी तब जबकि अभी प्रक्रिया के दो चरण हुए हैं, अभी तो कई चरण शेष बचे हुए हैं। अकेले असम में जो पूर्वोत्तर के राज्यों में बेशक सबसे बड़ा है, किन्तु देश में छोटे ही राज्यों में गिना जाता है और ऐसे राज्य में चालीस लाख लोग सूची से बाहर हैं, यदि सम्पूर्ण देश का अनुमान किया जाय तो संख्या करोड़ों में होगी। इनमें मुख्य भाग ऐसे घुसपैठियों का है जो मुस्लिम जनसंख्या वाले बाँग्लादेश से आये हुए हैं, जबकि वे स्वयं भी मुस्लिम हैं, अर्थात् उनकी कोई विवशता नहीं है, न प्राणहानि का भय है, न उनके धर्म की हानि है, न उनकी संस्कृति को कोई खतरा है। लेकिन हमारे देश के सत्तालोलुप राजनेताओं के संरक्षणवादी दृष्टिकोण के फलरूवरूप वे घुसपैठिये राशनकार्ड, वोटर कार्ड एवं आधार कार्ड से लैस देश के नागरिक होने का दावा कर रहे हैं। दूसरी ओर नये-नये बर्मा से आये रोहिंग्या आतंकी जिन्होंने वहाँ के बौद्धों तथा हिन्दुओं का नरसंहार किया तथा उनका जीना दूभर कर दिया था, उन पर भी सरकारों और कोर्टों का दृष्टिकोण स्पष्ट नहीं है, यदि शीघ्र ही इनका समाधान नहीं किया गया तो भविष्य में यह भी एक अत्यन्त खतरनाक समस्या बनकर खड़ी होगी।

अतः सरकारों को तथा न्यायालयों को चाहिए कि त्वरित कार्यवाही करते हुए अन्तिम दोनों प्रकार के घुसपैठियों को चिन्हित कर किसी भी प्रकार से देश की सीमाओं से बाहर करें और सभी दलों के राजनेताओं को चाहिए कि वे अपनी वाणी को संयमित व अपने स्वार्थ एक तरफ रखते हुए अपने षड्यन्त्रकारी कारनामों को विराम देकर राष्ट्ररक्षा के इस ऐतिहासिक महत्व के कार्य को सम्पन्न करवाने में पूर्ण सहयोग दें। राजनीति तो आयेगी और जायेगी तथा राजनीति भी तभी कर पायेंगे जब देश सुरक्षित होगा। और हमें चाहिए सुरक्षित देश।

वेद ही ईश्वर का संविधान : आचार्य धर्मपाल

युवाओं को ईश्वर और धर्म के विषय में बताते आचार्य धर्मपाल। (पुरी)

पिहोवा, 14 जुलाई (पुरी): राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा के तत्वावधान में आर्य समाज पिहोवा में आर्य प्रशिक्षण सत्र आयोजित किया। इस सत्र में पिहोवा व आस-पास के गांव के युवाओं ने भाग लिया। लाडवा से आए आचार्य धर्मपाल ने युवाओं को ईश्वर, धर्म और ईश्वर के संविधान वेद के विषय में बताया। आचार्य ने बहुत से नामों की व्याख्या करते हुए ईश्वर पर अटूट विश्वास रखने की प्रेरणा दी।

इस अवसर पर तरुण आर्य, आर्य हरीश, तरसेम, गुरमेश, संदीप गोयल, मिंटू, राजेश, बाबू राम सहित अनेक आर्य व युवा मौजूद रहे।

स्वागत किया। मीटिंग की अध्यक्षता बाबा जमीननाथ गौशाला धरोदी के सतीश वाल्मीकि, सुखदेव शर्मा सहित अनेक कार्यकर्ता मौजूद रहे।

चरित्र निर्माण शिविर शुरू

आयोजित चरित्र निर्माण में युवाओं को सम्बोधित करते वक्ता। (पुलिस)

जींद, 14 जुलाई (ब्यूरो): घोघड़ियां गांव के राजकीय कन्या उच्च विद्यालय में 2 दिवसीय चरित्र निर्माण शिविर शुरू हुआ। राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा के इस शिविर का शुभारम्भ करते हुए आचार्य दयानंद ने ईश्वर के विभिन्न नामों और गुणों तथा स्वरूप का वर्णन किया। बाद में उन्होंने धर्म की सही परिभाषा बताई और कहा कि जब मनुष्य अपने धर्म यानि कर्तव्य से विमुख हुआ है तो उस राष्ट्र का पतन हुआ है। संदीप आर्य ने युवाओं को चरित्र निर्माण बारे जानकारी दी। इस मौके पर आर्य कुलबीर, प्रदीप, सुरेंद्र आर्य, नरेंद्र, कप्तान, संदीप, पवन, जयकिशन, राजेश, जोगेंद्र, मुनिम आर्य आदि मौजूद थे।

शिविर में युवाओं ने सीखे आत्मरक्षा के गुर

शिविर में आत्मरक्षा के गुर सिखाते युवा।

अमर उजाला ब्यूरो

पिल्लूखेड़ा। शनिवार को राजकीय कन्या उच्च विद्यालय बुढ़ाखेड़ा में राष्ट्रीय आर्य क्षत्रिय सभा जींद के तत्वावधान में दो दिवसीय आत्मरक्षा शिविर का आयोजन किया गया। इसमें क्षत्रिय सभा के प्रशिक्षक आर्य बलजीत ने युवाओं को आत्मरक्षा के गुर सिखाए।

शिविर का आरंभ ओम ध्वजारोहण और यज्ञ के साथ हुआ। शिविर में जींद जनपद के दर्जनों गांव से युवा पहुंचे हैं। आर्य बलजीत ने बताया कि ब्रह्मचर्य के पालन, व्यसन से मुक्त होकर और नियमित व्यायाम से युवा अपने राष्ट्र की रक्षा कर सकता है, क्योंकि स्वस्थ शरीर के साथ ही स्वस्थ मस्तिष्क का होना संभव है। क्षत्रिय सभा जींद के अध्यक्ष आर्य राजबीर ने बताया कि ऐसे शिविरों से युवा अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूक हो रहे हैं। इस अवसर पर आर्य जयदेव, संदीप आर्य बुढ़ाखेड़ा, सचिव आर्य राजेश किनाना, आर्य रामकरण सिवाहा और महेंद्र आर्य मोरखी उपस्थित रहे।

धर्म का अर्थ है कर्तव्य : धर्मपाल

पिल्लूखेड़ा। बुढ़ाखेड़ा के राजकीय कन्या उच्च विद्यालय में राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा के तत्वावधान में दो दिवसीय शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का शुभारंभ यज्ञ द्वारा किया गया। आचार्य धर्मपाल ने ईश्वर सत्र विषय में ईश्वर के विभिन्न नामों और गुणों व स्वरूप के बारे में बताया। उन्होंने धर्म सत्र में धर्म की परिभाषा बताई और इसके अंगों का वर्णन करते हुए कहा कि धर्म का अर्थ कर्तव्य से है, जब-जब मनुष्य अपने धर्म अर्थात कर्तव्य से विमुख हुआ है तब-तब उस राष्ट्र का पतन हुआ है। वर्तमान में भी मनुष्य द्वारा ईश्वर और धर्म के सही स्वरूप को नहीं जानने के कारण दुख भोगता है। निर्मात्री सभा जींद के जनपदीय सचिव संदीप आर्य बुढ़ाखेड़ा ने कहा कि मनुष्य पूर्वजों के श्रेष्ठ सिद्धांतों को अपनाकर ही अपने राष्ट्र को उन्नति की ले जा सकता है। इस अवसर पर निर्मात्री सभा सफीदों के अध्यक्ष जयभगवान आर्य, पार्षद हरदीप, सचिव बलराज आर्य, दीपक आर्य जामनी, रामकरण आर्य सिवाहा मौजूद रहे।

शिविर में संदेश सुनते आर्य समाज के लोग।

यज्ञ कर किया शिविर का शुभारंभ

जींद | राजकीय कन्या उच्च विद्यालय घोघड़िया में राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा की ओर से दो दिवसीय शिविर का आयोजन किया गया। इसका शुभारंभ यज्ञ द्वारा किया गया। यज्ञ के उपरांत आचार्य दयानंद ने बताया कि धर्म का अर्थ कर्तव्य से है, जब जब मनुष्य अपने धर्म अर्थात कर्तव्य से विमुख हुआ है तब तब उस राष्ट्र का पतन हुआ है। वर्तमान समय में भी मनुष्य द्वारा ईश्वर और धर्म के सही स्वरूप को न जानने के कारण दुःख भोगता है। इस मौके पर सचिव संदीप आर्य, अध्यक्ष नरेंद्र आर्य, उचाना अध्यक्ष कप्तान आर्य, संदीप आर्य, पवन आर्य, जयकिशन आर्य, राजेश किनाना, जोगिंद्र आर्य, मुनीम आर्य मौजूद रहे।

समाचार पत्रों में आर्य निर्माण के समाचार

सक्रियता व पुरुषार्थ आवश्यक

-आचार्य सतीश

संसार भर में अनेकों विचार धाराएं समय-समय पर प्रतिस्थापित होती रहती हैं। सृष्टि के प्रारम्भ से वैदिक विचारधारा से लेकर उसके बाद भी अनेकों विचारधाराएं प्रचलित हुई हैं, लेकिन कोई विचारधारा कितनी प्रचलित होती है और कितनी व्यापक तथा स्थायी होती है, इसके पीछे दो ही मुख्य कारण हैं **एक**- उसको मानने वाले कितना पुरुषार्थ करते हैं और **दूसरा**- उसके पीछे बल कितना है और बल सबसे बड़ा होता है शासन का। यह ठीक है कि विचारधाराएं शासन बदल देती है और नए शासन स्थापित कर देती हैं, लेकिन उस विचारधारा को अपनाने वाले व्यक्तियों के पुरुषार्थ के बिना यह संम्भव नहीं है। अर्थात् विचारधारा मूर्त है उसको विस्तृत तथा प्रतिस्थापित करने के लिए चेतन अर्थात् उसके अनुयायियों का पुरुषार्थ व शासन का बल आवश्यक है और शासन का बल भी बिना पुरुषार्थ के प्राप्त करना संम्भव नहीं है, ना पहले कभी था, ना आज के युग में है और न भविष्य में कभी ऐसा हो सकता है, चाहे वह प्रजातान्त्रिक व्यवस्था ही क्यों न हो।

इस प्रकार के अनेकों उदाहरण इतिहास में उपलब्ध हैं कि जिस विचारधारा को भी सत्ता का संरक्षण प्राप्त हुआ, चाहे वह विचारधारा अधिक उपयोगी हो, कम उपयोगी हो या अनुपयोगी हो, उसका विस्तार सत्ता का संरक्षण प्राप्त होते ही बढ़ता चला गया, जन-जन में व्यापक हो गया। उदाहरण स्वरूप बुद्ध की विचारधारा का विस्तार सम्राट अशोक द्वारा, ईसा का विस्तार रोम शासकों द्वारा, मुहम्मद की प्रतिस्थापना अरब शासकों द्वारा, कम्यूनिस्टों की विचारधारा रूस के शासकों द्वारा विस्तारित हुई। इसी प्रकार विचारधारों का पतन भी शासकों के पतन के साथ ही होता रहा है। और इनका सबसे बड़ा उदाहरण है वेद की विचारधारा, जब उसको मानने वाले शासकों का महाभारत काल के आस-पास व उसके बाद व्यापक रूप से पतन हुआ तो वैदिक विचारधारा भी संसार भर से सिमटती चली गई। अर्थात् कोई भी विचारधारा बिना पुरुषार्थ व बिना सत्ता के संरक्षण के विस्तृत व स्थायित्व प्राप्त नहीं कर सकती चाहे वह संसार की सर्वश्रेष्ठ, सर्वहितकारी, ईश्वर प्रदत्त वैदिक विचारधारा ही क्यों न हो।

आर्यो! ऋषि दयानन्द की विद्वता व पुरुषार्थ के कारण आज हम वेदों के ज्ञान व सिद्धान्तों से परिचित हैं। इन सर्वश्रेष्ठ सिद्धान्तों को जन-जन तक फैलाने का पुरुषार्थ हजारों युवक आर्य बनकर कर रहे हैं। अनेकों आर्य भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में अपना-अपना प्रयास कर रहे हैं। उन्हीं में कुछ युवक शासन के लिए भी संघर्ष कर रहे हैं, जिससे आर्य विचारधारा को व्यापक व स्थायी बनाया जा सके। वे भी जानते हैं कि संघर्ष लम्बा है, पहले भी प्रयास किया गया है, आज भी कर रहें हैं, आगे भी करते रहेंगे। क्योंकि सिद्धान्त को समझकर लक्ष्यप्राप्ति के मार्ग को जानते हैं, इसलिए मार्ग पर चलना महत्वपूर्ण है, सफलता अवश्य मिलेगी और सफलता निर्भर करती है हमारे पुरुषार्थ पर। हाँ, यदि लक्ष्य प्राप्ति से पहले रूक जाते हैं तो असफलता मिलती है। चलते रहने से मार्ग यदि सही है तो लक्ष्य की प्राप्ति अवश्य होती है। अत: आर्यों हम सब का कर्तव्य बनता है कि वेद प्रतिस्थापना के जिस लक्ष्य को हम प्राप्त करना चाहते हैं, उस लक्ष्य के लिए जो भी, जिस क्षेत्र में भी संघर्षरत हो, हमें उसका सहयोग करना चाहिए और स्वयं भी संघर्ष करना चाहिए।

हम सब का लक्ष्य अधिक से अधिक आर्य बनाना और राष्ट्र को आर्यावर्त्त बनाना है। हमें अपने लक्ष्य को हर समय ध्यान में रखना चाहिए। बिना पुरुषार्थ के न सफलता मिलती है और न ही कार्य करने की ऊर्जा। शिथिलता व्यक्ति को उसके लक्ष्य से भटका देती है। जिस प्रकार स्वार्थ व्यक्ति को उसके श्रेष्ठ लक्ष्य से दूर कर देता है, इसी प्रकार शिथिलता लक्ष्य को असम्भव बना देती है, अत: हमें पुरुषार्थ के लिए निरन्तर सक्रिय बने रहना चाहिए। मेरा सब आर्यों से निवेदन, अनुग्रह व निर्देश है कि हम जहाँ भी हों हमारी सक्रियता का अनुभव आस-पास के लोगों को होना चाहिए। सभी को यह लगना चाहिए कि हमारा एक लक्ष्य है, हम एक लक्ष्य के लिए कार्य कर रहे हैं, लक्ष्य भले ही आज दूर लगता है लेकिन उस ओर बढ़ तो रहे हैं। थककर भी जितनी दूर चला जा सके चलने का प्रयास करते रहना चाहिए, क्या पता कल हमारे ही वंशज इतने सक्षम हो जायें कि वे हमारे द्वारा निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त कर ले जाएं, लेकिन यदि आज हम शिथिल हो गये तो भविष्य की हमारी पीढ़ी ही लक्ष्य विहिन हो जाएगी।

आर्यों हम सबका सौभाग्य है कि आर्य निर्माण की जो प्रक्रिया चल रही है उसके परिणाम सुखद हैं, आज तीन-तीन पीढ़ियाँ कार्य में लगी हुई हैं और निरन्तर एक ऐसी पीढ़ी तैयार हो रही है जो पिछली पीढ़ी से अधिक ऊर्जावान और पुरुषार्थी है। अत: हम सब का कर्त्तव्य है कि हम पुरुषार्थ को अपनी जीवन शैली बनाएं, आपने लक्ष्य को ध्यान में रखें और निरन्तर बिना शिथिल हुए, कमजोर पड़े, बढ़ते ही रहें, यही हमें लक्ष्य तक ले जाएगा। आर्यों की वृद्धि ही इस राष्ट्र और भावी पीढ़ी के संरक्षण का उपाय है।

राष्ट्रीय आर्य छात्र सभा के प्रचारकों द्वारा छात्रों को निरन्तर आर्य सिद्धान्तों का परिचय

हे युवा! हमारा आदर्श कौन

–आचार्य धर्मपाल

आर्य समाज के उत्साही युवागण! बहुत दिनों से आपको सम्बोधित करने की सोच रहा था। संकोच यह था कि मेरी बात का प्रभाव आप पर पड़ भी सकेगा या नहीं? मेरे संकोच का मुख्य कारण यह भी था कि मैं जो कुछ कहूँगा उसका आदर्श रूप आपको कहाँ से दिखाऊँगा? आज देश में ही नहीं पूरे विश्व में मुझे एक भी ऐसा आदर्श व्यक्तित्व दिखाई नहीं दे रहा, जिसे दिखाकर मैं कहूँ कि तुम ऐसे बनो! मुझे संकोच इस बात का है कि मेरी बात को निराधार न मान लिया जाए।

तुम जिस महर्षि दयानन्द के अनुगामी हो उसकी अमर संस्था आर्यसमाज ने एक-एक करके एसे वीर जने हैं जिन्होंने देश को आजाद करके ही सांस ली है। श्रीमान श्याम जी कृष्ण वर्मा, स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपतराय, पं॰ लेखराम, गुरुदत्त विद्यार्थी, लाला हरदयाल, भाई परमानन्द, रामप्रसाद बिस्मिल, सरदार भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद, आदि आदि। ऐसे सहासी वीर युवकों की लड़ियाँ बिछ गई थी।

पर आज मेरे इस स्वतन्त्र देश की जो दयनीय दशा है उसका रोना किसको सुनाऊँ! मैं किसका नाम लूँ? क्या उन राजनेताओं का जिन्हें अपने देश की नहीं, अपने स्वार्थों की पूर्ति की अधिक चिन्ता है? क्या उन तथाकथित धार्मिक व्यक्तियों का जो धर्म की आड़ में भोले-भाले लोगों का शोषण करते हैं या उन नामी समाज सुधारकों का जो समाज को अपनी सम्पत्ति मान कर उसे उल्लू बनाने में अपनी कुशलता मानते हैं, नहीं हैं मेरे पास एक भी व्यक्ति, एक भी संस्था जिसका नाम लेकर मैं कह सकूं कि वह तुम्हारा आदर्श है तुम्हें उनका अनुसरण करना है! तुम्हें वैसा बनना है।

आज के युग में नास्तिकता व भौतिकता का अन्धड़ इतने वेग से बह रहा है कि उसका मुकाबला करने का साहस किसी में दिखाई नहीं देता, यह बात नहीं है कि सत्य अहिंसा, न्याय और ईमानदारी के पुष्प मुरझाकर सूख गये हैं? बात यह है कि इस अन्धड़ में उनकी सुगन्ध अस्त-व्यस्त हो गई है और अन्याय, अत्याचार, उत्पीड़न व शोषण की दुर्गन्ध इतनी तीव्र है कि उस सुगन्ध का किसी को आभास भी नहीं होता! पर क्या हुआ जब मानव मात्र दु:खों से संतप्त होने लगते हैं तब ईश्वरीय अनुकम्पा से मानव से मानव कल्याण हेतु कोई न कोई महान आत्माएं अवतरित होते रहते हैं जो मानव समाज के आदर्श बन इस संसार से प्रस्थान कर जाते हैं।

वर्तमान में इस घटाटोप अन्धड़ में यदि कोई प्रकाश की किरण नजर आती है जिसे हम अपना आदर्श मान सकते हैं तो एक ही संस्था का दिग्दर्शन होता है, वह संस्था है राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा जो किसी परिचय की मोहताज नहीं है। जिसके अद्‌भुत परिणाम युवा पीढ़ी के आदर्श बनते जा रहे हैं और इनके संस्थापक भी प्रकाण्ड विद्वान हैं जिनकी प्रेरणा से सभा के आचार्यगण भी आत्मविभोर हो जाते हैं। यही संस्था ही वर्तमान में युवाओं का आदर्श रूप बन सकती है। इसी संस्था ने युवाओं को उनके पूवर्जों, उनकी संस्कृति व सत्य सनातन वैदिक धर्म से परिचित कराया है और करवा रही है।

यही संस्था सिखाती है कि आओ हम अपने जीवन में राम की मर्यादाओं को अपनाकर महान बन जाएँ, हम भी अन्याय, अत्याचार का विरोध करते रहें, कोई राजकीय शक्ति भी हमें बन्धन में न रखे सके, हम संसार के बन्धनों से मुक्त होकर सभी को मुक्ति का मार्ग दिखलाएं। मुझे विश्वास है कि आप इस संस्था को आदर्श मानकार सत्य मार्ग पर चलने की प्रेरणा लेते रहेंगे।

आर्य संस्कृति

–ब्र. अंकुर आर्य, गुरुकुल टटेसर-जौन्ती, दिल्ली

आर्य संस्कृति ही क्यों? हिन्दू क्यों नहीं? संस्कृति राष्ट्र का प्राण है। जैसे मानव शरीर में जब तक प्राणों का आवागमन होता रहता है तब तक वह जीवित है। इसी भाँति संस्कृति राष्ट्र को एकता के सूत्र में बांधे रखती है। हमारी संस्कृति आर्य संस्कृति है और इसे वैदिक संस्कृति भी कहते हैं। तदनुसार हमारे देश का नाम आर्यावर्त्त है। आर्यों ने इसे आबाद किया। चार वेद, चार उपवेद, छः दर्शन, ब्राह्मण ग्रन्थ, उपनिषद, वेदों के अनुसार स्मृति, धर्म ग्रन्थ रामायण, महाभारत इत्यादि आर्य संस्कृति के ज्ञान के स्रोत हैं। मर्यादापुरूषोत्तम राम, योगीराज कृष्ण, दर्शनों के प्रवक्ता आचार्य गौतम, कपिल, कणाद्, पंतजलि, जैमिनी और महर्षि व्यास एवं अन्य धर्म ग्रन्थों के प्रणेता ऋषि, मुनि और चक्रवर्ती सम्राट आर्य संस्कृति के उज्ज्वल रत्न हैं। जो युगों-युगों से आर्य संस्कृति का दिव्य सन्देश संसार को दे रहे हैं। राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा इन्हें ही अपना आदर्श एवं मार्गदर्शक मानकर कार्य कर रही है।

इसके विपरीत कुछ संगठन वेद-गिरी शृंग से प्रवाहित आर्य संस्कृति की पावन गंगा को त्याग कर आततायी विदेशी आक्रमणकारियों की देन वर्तमान समय में हिन्दू नाम से चिपक कर बैठे हैं। जबकि यह सत्य है कि वर्तमान समय में हिन्दू से सम्बोधित किये जाने वाले सभी आर्यवंशी हैं और उनकी संस्कृति भी आर्य संस्कृति है। हमारे प्राचीन धर्मग्रन्थों में कहीं पर भी हिन्दू नाम नहीं आया। यहाँ तक कि तुलसीदास ने भी इसकी चर्चा नहीं की वस्तुत: यह नाम अरबी फारसी भाषाओं का है जिसके अर्थ उनके शब्दकोषों में चोर, डाकू, गुलाम, काफिर, काला, अशुभ इत्यादि है। वो हमें इन्हीं नामों से सम्बोधित करते थे। लोक में देखा जाता है कि किसी का नाम परिवर्तित कर बोलने से कुछ दिन तो वह विरोध करता है परन्तु कालान्तर में उसे अपभ्रंश नाम से चिढ़ या ग्लानि नहीं रहती और वह इसी परिवर्तित हुए नाम से व्यवहार में प्रवृत्त होने लगता है। इसी भाँति विदेशियों द्वारा सम्बोधित हिन्दू नाम को ही हम अपना वास्तविक नाम समझ बैठे। जब नाम ही हिन्दू नहीं तो हिन्दू संस्कृति का कोई भी अर्थ नहीं रह जाता। सम्वत् 1926 ई॰ को काशी में 46 पण्डितों ने स्वयं मिलकर व्यवस्था पत्र लिखा था कि हमारा नाम हिन्दू नहीं हैं। इस पर स्वामी विशुद्धानन्द एवं बालशास्त्री के हस्ताक्षर भी थे। ये दोनों अपने समय में काशी के सबसे बड़े पण्डित समझे जाते थे। और इन्होंने स्वामी दयानन्द जी से भी शास्त्रार्थ किया था। अत: गर्व से कहो हम हिन्दू नहीं आर्य हैं।

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा तेज और क्षात्र बल से सम्पन्न नवयुवकों का निर्माण करने वाली राष्ट्रीय और सामाजिक सभा है। आर्य संस्कृति का जनसन्देश जन-जन तक पहुँचाने का संकल्प, चरित्रवान् नवयुवकों का निर्माण कार्य, देश धर्म की रक्षार्थ समर्पित जीवन, विश्वबन्धुत्व की भावना इस सबका समन्वित स्वरूप राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा में ही देखने को मिलेगा अत: आओ हम सब राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा के सदस्य बनकर अपने जीवन को महान बनावें और आर्य संस्कृति अपनावें।

व्यवहारभानुः - आचरण की शिक्षा के लिए ऋषि का श्रेष्ठ ग्रन्थ

ऋषि दयानन्द ने वेद के सिद्धान्तों को जनसामान्य तक पहुँचाने के लिए अन्य कार्यों के साथ-साथ एक पूर्णकालिक लेखक के रूप में भी अनेकों ग्रन्थों की रचना की है। उन्होंने विशुद्ध व्याकरण के ग्रन्थों से लेकर वेदभाष्य तक व सत्यार्थ प्रकाश जैसे कालजयी ग्रन्थ से लेकर सामान्य सिद्धान्त अनुरूप व्यवहार के लिए व्यवहारभानु जैसी सामान्य जन के लिए भी अत्यन्त उपयोगी पुस्तकों की रचना की है। ऋषि का एक-एक शब्द व पंक्ति व्यक्ति के लिए अमूल्य प्रेरणा का स्रोत है। आइए उनकी व्यवहारभानुः पुस्तक के स्वाध्याय द्वारा वैदिक सिद्धान्तों के परिपालन की दिशा में आगे बढ़कर अपने-अपने आचरण को वेदानुकुल बनाएं और ऋषि के ही शब्दों के अनुरूप- **''अपने तथा अपने-अपने सन्तान तथा विद्यार्थियों का आचार अत्युत्तम करें, कि जिससे आप और वे सब दिन सुखी रहें।''**

यहाँ प्रस्तुत है व्यवहारभानुः पुस्तक, आईये इसका स्वाध्याय प्रारंभ करते हैं। ध्यान से पढ़ें तथा विचार करें कि यदि हम ऋषि के बताए अनुसार व्यवहार करते हैं तो हम कितना अपना व दूसरों का हित कर सकते हैं और समाज में व्याप्त अनेक प्रकार के दुर्व्यवहारों से न केवल स्वयं बच सकते हैं अपितु अपनी सन्तानों तथा शिष्यों को भी बचा सकते हैं।

भूमिका

मैंने इस संसार में परीक्षा करके निश्चय किया है कि जो धर्मयुक्त व्यवहार में ठीक-ठीक वर्त्तता है उसको सर्वत्र सुखलाभ और जो विपरीत वर्त्तता है वह सदा दुःखी होकर अपनी हानि कर लेता है। देखिए, जब कोई सभ्य मनुष्य विद्वानों की सभा में वा किसी के पास जाकर अपनी योग्यता के अनुसार नम्रतापूर्वक नमस्ते आदि करके बैठके दूसरे की बात ध्यान दे, सुन, उसका सिद्धान्त जान-निरभिमानी होकर युक्त [उत्तर] प्रत्युत्तर करता है, तब सज्जन लोग प्रसन्न होकर उसका सत्कार, और जो अण्ड-बण्ड बकता है उसका तिरस्कार करते हैं।

जब मनुष्य धार्मिक होता है, तब उसका विश्वास और मान्य शत्रु भी करते हैं। और जब अधर्मी होता है, तब उसका विश्वास और मान्य मित्र भी नहीं करते। इससे जो थोड़ी विद्यावाला भी मनुष्य श्रेष्ठ शिक्षा पाकर सुशील होता है, उसका कोई भी कार्य नहीं बिगड़ता।

इसलिए मैं मनुष्यों की उत्तम शिक्षा के अर्थ सब वेदादिशास्त्र और सत्याचारी विद्वानों की रीति [से] युक्त इस व्यवहारभानु ग्रन्थ को बनाकर प्रकट करता हूँ कि जिसको देख-दिखा, पढ़-पढ़ाकर मनुष्य अपने और अपने-अपने सन्तान तथा विद्यार्थियों का आचार अत्युत्तम करें, कि जिससे आप और वे सब दिन सुखी रहें।

इस ग्रन्थ में कहीं-कहीं प्रमाण के लिए संस्कृत और सुगम भाषा लिखी और अनेक उपयुक्त दृष्टान्त देकर सुधार का अभिप्राय प्रकाशित किया है, कि जिसको सब कोई सुख से समझ के अपना-अपना स्वभाव सुधार के सब उत्तम व्यवहरों को सिद्ध किया करें।।

सं० १९३६ **दयानन्दसरस्वती**

फाल्गुन शुक्ला १५ **काशी**

व्यवहारभानुः

ऐसा किस मनुष्य का आत्मा होगा कि जो सुखों को सिद्ध करनेवाले व्यवहारों को छोड़कर उलटा आचरण करने में प्रसन्न होता हो? क्या यथायोग्य व्यवहार किये बिना किसी को सर्व सुख हो सकता है? क्या मनुष्य अच्छी शिक्षा से धर्म अर्थ काम और मोक्ष फलों को सिद्ध नहीं कर सकता? और इसके विना पशु के समान होकर दुःखी नहीं रहता है? जिस लिये सब मनुष्यों को सुशिक्षा से युक्त होना अवश्य है, इसलिये यह बालक से लेकर वृद्धपर्यन्त मनुष्यों के सुधार के अर्थ व्यवहार-सम्बन्धी शिक्षा का विधान किया जाता है।

[पण्डित के लक्षण]

(प्रश्न)-कैसे पुरुष पढ़ाने और शिक्षा करनेहारे होने चाहियें?

(उत्तर)-पढ़ानेवालों के लक्षण-

आत्मज्ञानं समारम्भस्तितिक्षा धर्मनित्यता।
यमर्था नापकर्षन्ति स वै पण्डित उच्यते॥१॥

[महाभारत उद्योगपर्व विदुरप्रजागर अ० ३३ । श्लोक १५।]

जिस को परमात्मा और जीवात्मा का यथार्थ ज्ञान, जो आलस्य को छोड़कर सदा उद्योगी, सुखदुःखादि का सहन, धर्म का नित्य सेवन करनेवाला हो, जिसको कोई पदार्थ धर्म से छुड़ाकर अधर्म की ओर न खींच सके, वह **'पण्डित'** कहाता है ।।१।।

निषेवते प्रशस्तानि निन्दितानि न सेवते ।
अनास्तिकः श्रद्दधान एतत् पण्डितलक्षणम् ॥२॥

[महा० उद्यो० विदुरप्रजागर अ० ३३ । श्लोक १६]

जो सदा प्रशस्त, धर्मयुक्त कर्मों का करने और निन्दित अधर्मयुक्त कर्मों को कभी न सेवनेहरा, जो न कदापि ईश्वर, वेद और धर्म का विरोधी, और परमात्मा, सत्यविद्या और धर्म में दृढ़ विश्वासी है, वही मनुष्य **'पण्डित'** के लक्षणयुक्त होता है।।२।।

क्षिप्रं विजानाति चिरं शृणोति विज्ञाय चार्थं भजते न कामात्।
नासंपृष्टो ह्युपयुङ्क्ते परार्थे, तत्प्रज्ञानं प्रथमं पण्डितस्य ॥३॥

[महा० उद्यो० विदुरप्रजागर अ० ३३ । श्लोक २२]

जो वेदादि शास्त्र और दूसरे के कहे अभिप्राय को शीघ्र ही जानने, दीर्घकालपर्यन्त वेदादि शास्त्र और धार्मिक विद्वानों के वचनों को ध्यान देकर सुनके ठीक-ठीक समझ निरभिमानी, शान्त होकर दूसरों से प्रत्युत्तर करने, परमेश्वर से लेकर पृथिवीपर्यन्त पदार्थों को जानकर उनसे उपकार लेने में तन, मन, धन से प्रवृत्त होकर काम क्रोध, लोभ, मोह, भय, शोकादि दुष्ट गुणों से पृथक् वर्त्तमान, किसी के पूछने वा दोनों के संवाद में विना प्रसङ्ग के अयुक्त भाषणादि व्यवहार न करनेवाला मनुष्य है, यही **'पण्डित'** की बुद्धिमत्ता का प्रथम लक्षण है ।।३।।

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा द्वारा आयोजित दो दिवसीय सत्रों व सभा से सम्बन्धित नवीन जानकारी सभा की बेवसाईट-

www.aryanirmatrisabha.com

पर उपलब्ध है। अतः आप वहाँ से जानकारी ले सकते हैं। यह पत्रिका भी प्रत्येक मास दिनांक 10 को सभा की बेवसाईट पर डाल दी जाती है अतः पत्रिका को पढ़ने के लिए साईट के लिंक

www.aryanirmatrisabha.com/पत्रिका

पर जाएं।

28 जुलाई-26 अगस्त 2018 **श्रावण** ऋतु- वर्षा

सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार	रविवार
उपाकर्म पर्व 26 अगस्त					श्रवण कृष्ण प्रतिपदा 28 जुलाई	धानिष्ठा कृष्ण द्वितीया 29 जुलाई
धानिष्ठा कृष्ण द्वितीया 30 जुलाई	शतभिषा कृष्ण तृतीया 31 जुलाई	पूर्वाभाद्रपदा कृष्ण चतुर्थी 1 अगस्त	उत्तराभाद्रपदा कृष्ण पंचमी 2 अगस्त	रेवती कृष्ण षष्ठी 3 अगस्त	अश्विनी कृष्ण सप्तमी 4 अगस्त	भरणी कृष्ण अष्टमी 5 अगस्त
स्वातिका कृष्ण नवमी 6 अगस्त	रोहिणी कृष्ण दशमी/एकादशी 7 अगस्त	मृगशिरा कृष्ण द्वादशी 8 अगस्त	आर्द्रा कृष्ण त्रयोदशी 9 अगस्त	पुष्य कृष्ण चतुर्दशी 10 अगस्त	आश्लेषा कृष्ण अमावस्या 11 अगस्त	मघा शुक्ल प्रतिपदा 12 अगस्त
पू० गाल्गुनी शुक्ल द्वितीया/तृतीया 13 अगस्त	उ० गाल्गुनी शुक्ल चतुर्थी 14 अगस्त	हस्त शुक्ल पंचमी 15 अगस्त	चित्र शुक्ल षष्ठी 16 अगस्त	स्वाती शुक्ल सप्तमी 17 अगस्त	विशाखा शुक्ल अष्टमी 18 अगस्त	अनुराधा शुक्ल नवमी 19 अगस्त
ज्येष्ठा शुक्ल दशमी 20 अगस्त	मूल शुक्ल एकादशी 21 अगस्त	पूर्वाषाढ़ा शुक्ल एकादशी 22 अगस्त	उत्तराषाढ़ा शुक्ल द्वादशी 23 अगस्त	उत्तराषाढ़ा शुक्ल त्रयोदशी 24 अगस्त	श्रवण शुक्ल चतुर्दशी 25 अगस्त	धानिष्ठा शुक्ल पूर्णिमा 26 अगस्त

27 अगस्त-25 सितम्बर 2018 **भाद्रपद** ऋतु- शरद

सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार	रविवार
शतभिषा कृष्ण प्रतिपदा 27 अगस्त	पूर्वाभाद्रपदा कृष्ण द्वितीया 28 अगस्त	उत्तराभाद्रपदा कृष्ण तृतीया 29 अगस्त	रेवती कृष्ण चतुर्थी 30 अगस्त	अश्विनी कृष्ण पंचमी 31 अगस्त	भरणी कृष्ण षष्ठी 1 सितम्बर	स्वातिका कृष्ण सप्तमी 2 सितम्बर
रोहिणी कृष्ण अष्टमी 3 सितम्बर	मृगशिरा कृष्ण नवमी 4 सितम्बर	आर्द्रा कृष्ण दशमी 5 सितम्बर	पुनर्वसु कृष्ण एकादशी 6 सितम्बर	पुष्य कृष्ण द्वादशी/त्रयोदशी 7 सितम्बर	आश्लेषा कृष्ण चतुर्दशी 8 सितम्बर	मघा कृष्ण अमावस्या 9 सितम्बर
उ० गाल्गुनी शुक्ल प्रतिपदा 10 सितम्बर	हस्त शुक्ल द्वितीया 11 सितम्बर	चित्र शुक्ल तृतीया 12 सितम्बर	स्वाती शुक्ल चतुर्थी 13 सितम्बर	विशाखा शुक्ल पंचमी 14 सितम्बर	अनुराधा शुक्ल षष्ठी 15 सितम्बर	ज्येष्ठा शुक्ल सप्तमी 16 सितम्बर
मूल शुक्ल अष्टमी 17 सितम्बर	मूल शुक्ल नवमी 18 सितम्बर	पूर्वाषाढ़ा शुक्ल दशमी 19 सितम्बर	उत्तराषाढ़ा शुक्ल एकादशी 20 सितम्बर	श्रवण शुक्ल द्वादशी 21 सितम्बर	धानिष्ठा शुक्ल त्रयोदशी 22 सितम्बर	शतभिषा शुक्ल चतुर्दशी 23 सितम्बर
पूर्वाभाद्रपदा शुक्ल चतुर्दशी 24 सितम्बर	उत्तराभाद्रपदा शुक्ल पूर्णिमा 25 सितम्बर				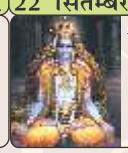 श्री कृष्णचन्द्र जयन्ती भाद्रपद कृष्ण अष्टमी (03 सितम्बर)	

Rishi Dayanand - His Life And Work

-Saroj Arya, Delhi

A curious and prolonged controversial debate took place between Dayanand Saraswati and the pundits, but the latter notwithstanding their boasted learning and deep insight into the Shastras met with a signal cofusion. Finding it impossible to overcome the great man by a regular discussion the pundits resorted to the adoption of a sinister course to fulfill their purpose. They made over to the sage an extract from the Puranas that favoured idolatry, saying that it is the text from the Vedas. The latter was pondering over it, when the host of pundits, headed by the Maharaja himself, clapped their hands, signifying the defeat of the great pundit in the religious warfare. Though mortified greatly at the unmanly conduct and bad treatment of the Maharajs, Dayanand Swami has not lost courage. He is still waging the religious contest with more earnestness that ever. Though alone, he stands undaunted in the midst of a host of opponents. He has the shield of truth to protect him, and his banner of victory is waved in the air. The pundit has lately published a pamphlet, entitled the Satya Dharma Vichara, containing particulars of the religious contest above alluded to, and has issued a circular calling on the pundits of Banaras to show the part of the Vedas which sanctions idol-worship. No one has ventured to make his appearance.

It is significant, that several years after this contest when Dayanand visited Banaras, on his return from Bombay, the Maharaja sent him word that he should grace him with a visit. Swamiji did not like to go but when the request was repeated the next day, and an officer turned up with a carriage, Swamiji agreed. He was received respectfully and seated on the royal throne. The Maharaja put a garland of flowers round his neck, paid his respects and remarked, "I have been worshiping idols since long, and therefore I had the painful duty of opposing you. If my conduct at the time of shastrartha (meaningful discussion for knowing truth) annoyed you in any way, I beg your pardon."

Another pertinent fact needs to be told. One Goswami Ghanashyam Das went from Multan to Banaras where he met Balshashtri and question him as to who had won at the well-known Shastarrtha of Banaras. "we are householders, and Dayanand a sanyasi, deserving respect at our hands; there is no meaning in holding a discussion with him," replied Balshastri.

The learning of Banaras had not the patience to hear Dayanand out. He had been hooted down and abused, but the echo of this combat spread throughout the country, and Dayanand's name became famous all over India. The pundits of Banaras were bound the chains of ignorance. They had got so used to darkness that light seemed to hurt their eyes. But not so the whole of India. There were some who dared to think and see the light. They had begun to realize that Dayanand was not only a destroyer but a builder and not merely a rebel but a redeemer too.

From Banaras, Swami Dayanand went to Allahabad where the Kumbha fair was going to be held. People flocked to hear his lectures on idol-worship and the ideas of many a hearer brought a fundamental change. After staying for about a month at Allahabad, the Swami proceeded to Mirzapur, where he remained for about two months. Here too, his speeches had a wholesome effect. Many pundits gave up idol-worship, and began performing Sandhya regularly. In 1870, the Swami returned to Banaras and continued his exposition of Vaidic truths. The Maharaja of Bharatpur, Riwan, and Nairwa paid a visit to the Swami during his stay at Banaras, this time. They were highly pleased to hear him talk on the existence of God.

To be continued...

द्विदिवसीय आर्य/आर्या प्रशिक्षण के बाद सत्रार्थियों के अनुभव

इस सत्र को ग्रहण करना जीवन की एक बहुत बड़ी उपलब्धि मानता हूँ। अपनी बीती हुई जिन्दगी में मैंने ऐसा सत्र कभी कही नहीं देखा जिसमें अपने राष्ट्रहित के लिए आचार्य जी ने निस्वार्थ सेवा भाव को इतने अच्छे व आसान तरीके से उदाहरण सहित समझाया, जोकि मुझे पूरी तरह से समझ आया तथा मेरे अन्दर देशभक्ति व राष्ट्रभक्ति की भावना ने दोबारा जन्म लिया है। तथा साथ-साथ आचार्य जी ने झूठे आडम्बरों से बचने का, दिखावों से बचने के लिए जिस तरीके से समझाया, उससे समाज की आँखों पर पड़ा हुआ पर्दा पूरी तरह से उठ जाएगा। इसी में समाज की भलाई है। अगले सत्र में इससे भी ज्यादा ज्ञान प्राप्त करने की कोशिश करूँगा। जय आर्य! जय आर्यावर्त्त!

नाम: नीरज गोयल, आयु: 37 वर्ष, व्यवसाय: टूर एण्ड ट्रेवल्स, पता: रतिराम वाटिका, पानीपत, हरियाणा।

इस सत्र में शामिल होकर खुद को गौरवान्वित महसूस कर रहा हूँ। यहाँ आने से पूर्व मनपृष्ठ पर जो धूल जमी हई थी बहुत हद तक आचार्य जी ने अपने ज्ञान के प्रकाश से उसे साफ कर दिया है। मैं इस आर्य निर्मात्री सभा को यह यकीन दिलाता हूँ कि मैं राष्ट्र उत्थान में इसमें आर्य परिवार का एक हिस्सा बनकर अपनी पूर्ण प्रयास इस परिवार को समर्पित करता हूँ।

यहाँ आने से पूर्व देश की इस भयानक स्थिति से अनजान था लेकिन अब नहीं, मैं आपको पूर्ण यकीन दिलाता हूँ कि मैं ना पूर्व में और ना भविष्य में किसी व्यभिचार को उत्पन्न होने दूंगा और साथ ही साथ समाज में फैले अन्धकार में लोगों को जागरुक करने का भी प्रयास करूंगा।

नाम: रविन्द्र, आयु: 36 वर्ष, योग्यता:स्नातकोत्तर, पता: गांव राजाखेड़ी, पानीपत, हरियाणा।

मुझे इस सत्र करने के पश्चात् ऐसा लगता है कि मुझे अपने राष्ट्र को बचाने के लिए जो भी करना पड़े मुझे वो करना चाहिए। इसलिए मुझे आर्य बनना है और आर्य समाज को बढ़ाने के लिए जो करना पड़े वो मैं करूंगा और जहाँ भी इस सत्र में मेरी आवश्यकता होगी में वहाँ पर जरूर उपस्थित हो जाऊँगा। इसलिए में इस सत्र को पूरी तरह से मानता हूँ और अपने राष्ट्र के प्रति पूरी तरह से सेवा करना चाहता हूँ और इस देश को आर्यावर्त्त बनाने के लिए सहमत हूँ।

नाम: अमित कुमार, आयु: 22 वर्ष, योग्यता: स्नातक, पता: गांव नाईपुरा, मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश।

मैं यह सत्र पूरा करने के पश्चात् अपने अन्दर उठे आवेश और ज्ञान प्राप्ति के अनुसार यह लिख रहा हूँ कि मेरे घर में होने वाली पूजा विधि एवं मूर्ति पूजा और देवी-देवताओं से जुड़े पूजावाद को इस आश्रम में आकर सब को व्यर्थ समझ चुका हूँ। मुझे वास्तविकता का अनुभव हुआ है कि वास्तव में आर्य पूजा विधि तथा वेद ज्ञान ही सर्वश्रेष्ठ है। इसी भक्ति विधि से ईश्वर मार्ग की प्रप्ति हो सकती है और सबसे महत्वपूर्ण अनुभव मुझे अन्तिम सत्र में प्राप्त हुआ जिससे मुझे राष्ट्र की वास्तविक स्थिति के बारे में पता चला है और मैं संकल्प कर रहा हूँ। आज से अपने राष्ट्र की रक्षा, सेवा और राष्ट्र के उत्थान के लिए पूरे भाव से प्रत्येक कार्य करूंगा और आज से संकल्प करता हूँ कि मैं आज से पूर्ण आर्य हूँ।

नाम: अंकित आर्य, आयु: 22 वर्ष, योग्यता: स्नातक, पता: गांव नाईपुरा, मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश।

हमें ईश्वर के बारे में बताया गया और हमारे श्रेष्ठ पूर्वजों के गुणों को धारण करने के लिए प्रेरित किया गया। जो हमें बहुत अच्छा लगा। हमें राष्ट्र के बारे में जानकरी दी गई व राष्ट्रहित के लिए प्रेरित किया गया और मैं अपने राष्ट्रहित के लिए अग्रसर रहूगाँ तथा आर्य सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार करूंगा और छात्रसभा का संगठन करूंगा। अपने धर्म पथ से विचलित नहीं होऊँगा और वेदों को धारण करूंगा तथा उसको प्रचलित करूंगा। हमने सीखा ईश्वर एक है और हम मानते हैं। जयआर्य! जय आर्यावर्त्त!

नाम: जितेन्द्र कुमार, आयु: 26 वर्ष, योग्यता: बी.एड., एम.एस.सी., पता: रोहद, झज्जर, हरियाणा।

आओ यज्ञ करें!

अमावस्या	11 अगस्त	दिन-शनिवार	मास-श्रावण	ऋतु-वर्षा	नक्षत्र-आश्लेषा
पूर्णिमा	26 अगस्त	दिन-रविवार	मास-श्रावण	ऋतु-वर्षा	नक्षत्र-धनिष्ठा
अमावस्या	9 सितम्बर	दिन-रविवार	मास-भाद्रपद	ऋतु-शरद	नक्षत्र-मघा
पूर्णिमा	25 सितम्बर	दिन-मंगलवार	मास-भाद्रपद	ऋतु-शरद	नक्षत्र-उ०भाद्रपदा

संध्या काल

श्रावण मास, वर्षा ऋतु, कलि-5119, वि. 2075
(28 जुलाई 2019 से 26 अगस्त 2019)
प्रात: काल: 5 बजकर 45 मिनट से **(5.45 A.M.)**
सांय काल: 7 बजकर 00 मिनट से **(7.00 P.M.)**

भाद्रपद- मास, शरद ऋतु, कलि-5119, वि. 2075
(27 अगस्त 2018 से 25 सितम्बर 2018)
प्रात: काल: 6 बजकर 00 मिनट से **(6.00 A.M.)**
सांय काल: 6 बजकर 30 मिनट से **(6.30 P.M.)**

आर्य निर्माणशाला में विभिन्न स्थानों पर निर्मात्री सभा के आचार्यों द्वारा आर्य व आर्या निर्माण

स्वामी व प्रकाशक आचार्य हनुमत्प्रसाद द्वारा सांगोपांगवेद विद्यापीठ, आर्ष गुरुकुल, टटेसर-जौन्ती, दिल्ली-81 से प्रकाशित

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् - समाचार पत्र मे छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक का पूर्णतया सहमत होना आवश्यक नहीं है। क्योंकि अनवधानतावश त्रुटि एवं मतभिन्न होना सम्भव है। सभी न्यायिक विवाद दिल्ली में निपटाये जाएंगे।